मैथिली

काव्य प्रयोजन

BA - PART-3

प्रयोजन उपादेयताक अर्थ होइत अछि 'लाभ' तथा 'उद्देश्य'। संसारक प्रत्येक वस्तु सौद्देश्य होइत अछि। प्रत्येक काजक पाछू कोनो ने कोनो ~~प्रयोजन~~ उद्देश्य रहिते अछि। मूर्ख व्यक्ति सेहो बिना प्रयोजन काज नहि करैत अछि। तखन काव्यक बिनु प्रयोजनक कोनो रचना न सकैत अछि जे कि अत्यधिक व्यापक अछि। एहि ~~प्रसंग~~ संबंधमे भर्तृहरि स्पष्ट शब्द मे कहने छथि—

"अपारे काव्य संसारे कविरेव प्रजापति
यथा रुचे रोचते विश्वं तथेदं कवि प्रवर्तते"।

तँ काव्यक अत्यावश्यहि किछु ने किछु प्रयोजन होएबेक चाही। आ इएह कारण अछि जे भारतीय साहित्य मे काव्यक हेतु एवं प्रयोजन पर आदि काल सँ विस्तारक संग विचार कएल गेल अछि।

संस्कृत अलंकार शास्त्रक प्रथम मिमांसक भरतमुनि कहल जाइत छथि। यद्यपि हिनका सँ पूर्व ऋग्वेद, उपनिषद एवं रामायणादि पुराण मे थाम-थाम काव्यक महत्त्व पर यत्किञ्चत् प्रकाश भेटैत अछि। नाट्य शास्त्रक प्रथम प्रणेता 'भरतमुनि' एहि शास्त्रक प्रारंभहिमे नाटकक उपदेयताक परिचय देने छथि। हिनक मत काव्यक उद्देश्य थिक।

वेद व्यासक 'अग्निपुराण' मे तँ काव्य रचनाकेँ अत्यन्त दुर्लभ गुण मानल जाइत अछि। हिनक कथन छनि जे "काव्यक रमणीयताक स्वरूप नाटक सेवन सँ अर्थ, धर्म एवं तीनू वर्गक साधन भ' सकैत अछि।

आचार्य भामह काव्यक प्रयोजन पर विचार करैत लिखलन्हि अछि—

"सत्काव्यक रचना अथवा अनुशीलन सँ धर्म, अर्थ, काम, मोक्षक लाभ होएत अछि। कला सभ मे निपुणता भेटैत अछि तथा आनंदक प्राप्ति होएत अछि। आओर प्रयोजन मे कीर्तिक लाभ कवि केँ भेटैत अछि। एवं प्रीति अलौकिक आनंदक लाभ कवि ओ पाठक दुहू केँ होएत अछि।

"आचार्य वामनक" दृष्टिएँ काव्यक दुइए गोट

Scanned with CamScanner

प्रयोजन होइत अछि — प्रीति आओर कीर्ति। वामन आचार्य प्रीति के काव्यक दृष्टप्रयोजन तथा कीर्ति के अदृष्ट प्रयोजन कहलन्हि अछि।

'आचार्य रुद्रट' काव्यक अनेक प्रयोजन कहलन्हि अछि —

"युगान्त स्थिर जगतव्यापि यशक प्राप्ति, विपत्तिनाश, अलौकिकानन्दक प्राप्तिक कामना, धर्म, काम, मोक्षक प्राप्ति किन्तु यश के विशेष महत्व देलन्हि अछि। 'आनंद वर्द्धनाचार्य' काव्यक प्रमुख प्रयोजन प्रीति हृदयाल्हाद के मानलन्हि अछि।

'आचार्य विश्वनाथ' सेहो मानक सदृश पुरुषार्थ-चतुष्ठय के काव्यक प्रयोजन मानैत छथि। पंडित राज जगन्नाथ 'रसगंगाधर' मे काव्य प्रयोजन पर स्वतंत्र रूप सँ नहि कहने छथि तथापि रमणीयताक व्याख्या करैत लोकोत्तर आनंद कें 'प्रयोजन' मानैत छथि। हिनक मते रमणीय अर्थक प्रतिपादक शब्द कें काव्य कहल जाइत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक इतिहासमे काव्य-प्रकाशकार 'आचार्य 'मम्मट' द्वारा प्रतिपादित काव्य प्रयोजन सर्वाधिक मान्य एवं चर्चाक विषय अछि। मम्मटके अनुसार काव्यक प्रयोजन आनंद थिक। हिनक मतें यश, अर्थ, व्यवहारक ज्ञान, अकल्याण नाश, अलौकिक आनंद एवं कान्ता सम्मितोपदेश, एहि छओक वस्तुक प्राप्ति काव्यसँ होइत अछि।

उपर्युक्त छओ प्रयोजन पर निम्नलिखित रूपेँ विचार कएल जा सकैत अछि —

① यशक प्राप्तिक कामना — यशक कामना प्रत्येक व्यक्ति कें होइत अछि। ई एक प्रधान प्रेरक तत्व अछि। कालीदास, भवभूति, जायसी आदि कवि लोकनि यशहिक लेल काव्यक सृजन करने छलाह। भारवि सेहो यश प्राप्तिक लेल सेहो लिखैत छलाह। आशय ई अछि जे काव्यक सृजनक ई प्रधान प्रयोजन आओर प्रेरक तत्व 'यश' अछि।

② ~~काव्यक~~ अर्थलाभ — काव्यक भौतिक प्रयोजन मे सबसँ अधिक महत्त्वपूर्ण अर्थ अछि। किएक तँ संसारक प्रत्येक व्यक्ति कें एकर आवश्यकता अछि। हिन्दी साहित्य मे

Scanned with CamScanner

कवि ग्राम: धनहिक लेल काव्य लिखैत छलाह।

(3) व्यवहारज्ञान → काव्य सँ लोक व्यवहारक ज्ञान पाठककेँ होइत अछि। कवि पाठकक समक्ष अपन जीवनक अनुभव पर आधारित आदर्शक प्रतिपादन करैत अछि।

(4) अनिष्ट-निवारण → काव्य सँ अनिष्ट निवारण सेहो होइत अछि। 'मयूर' कवि सए श्लोक मे सूर्य क स्तुती कड़केँ अपन कष्ट-निवारण कएने छलाह। वामभट्ट पार्वतीक स्तुती कयने छलाह। गोस्वामी तुलसीदास सेहो 'हनुमानबाहु' क रचना कयने छलाह।

(5) सद्यः-परिनिवृत्ति → काव्य रचनाक मूल उद्देश्य अछि। ई काव्यस्वादजन्य सभ प्रयोजनक प्रयोजन थिक। एहिमे, ज्ञाता-ज्ञेय आओर ज्ञानक भेद असितअसम्मित रहैत अछि। काव्योत्पन्नक आनंद पाठक आओर कवि दुनू केँ भेटैत अछि। ई आनंद जीवनक विषमता एवं वेदना केँ दूर कड़केँ शान्ति आ मनोरंजक स्थापना करैत अछि।

(6) कान्ता सम्मितोपदेश → पत्नीक सदृश मधुर उपदेश देब सेहो काव्यक एक प्रयोजन थिक। अनेक सन्त सभक रचना एहि कोटिमे अबैत अछि। शास्त्र मे उपदेश देबाक तीन प्रकारक निर्देश अछि—

(i) प्रभु सम्मित, (ii) सुहृद सम्मित आओर (iii) कान्ता-सम्मित। एहि सभ मे कान्ता सम्मितोपदेश केँ महत्त्वपूर्ण मानल गेल अछि। वस्तुतः काव्यक उपदेश शक्कर मे लपटल कुनैनक गोलीक सदृश होइत अछि। तेँ काव्यक प्रयोजन क क्षेत्र मे एहि उपदेशक विशिष्ट स्थान अछि।

काव्यक प्रयोजनक संबंध मे कतेको भारतीय आचार्य वर्तमान समय मे पश्चातहुँ विचार केँ मान्यता दैत छथि। किछु आचार्यक मत छन्हि जे काव्यक प्रयोजन थिक मनोरंजन देब। एहि सिद्धांतक प्रतिपादक अधिकांश पाश्चात्य साहित्यकार भेल छथि। जाहिमे, आर०पी० साहनी, जेहडसन आदि छथि।

एहि तरहेँ देखैत छी जे पश्चिम मे काव्य कला मानल गेल अछि आओर कलाक अनेक

प्रयोजनक उल्लेख कएल गेल अछि। एहि सँ ई स्पष्ट भ जाइत अछि जे आधुनिक भारतीय समीक्षक गण पर पाश्चात्य साहित्य पूर्ण प्रभाव पड़ल अछि जे आधुनिक आलोचना साहित्यके स्पष्ट भ जाइत अछि।

निष्कर्ष यैह कहल जा सकैत अछि जे भारतीय चिंतन काव्य प्रयोजनक क्षेत्र मे सर्वोत्कृष्ट औ सर्वमान्य अछि।

The end

डॉ. पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, दरभंगा

Scanned with CamScanner